

कई रंग देखी, कई छाव देखें
इस छल से पूर्ण विश्व में कई भाव देखें।
ये मुश्किलों की राह में, अटूट मेरी चाह में,
कई मुकाम आएंगे, जो मुझको भेद जाएंगे।
पर सूर्य बल को साथ में, लिए दिलों को हाथ में,
मैं रात को हराऊंगा और खुद को जीत जाऊंगा।
ये मुश्किलें हजार हैं, गमों का ये बाजार है
वो पीड़ का समुद्र था और मन भी मेरा छुद्र था।
कामना अनेक थे, वो किस्मतों के लेख थे।
वो भाग्य को था मोड़ना, था किस्मतों को छोड़ना,
खुदा की ऐसी बेखुदी, सुधा भी पूरी बेसुधी।
पर मंजिलों की राह में, सुखों को सारे त्याग कर,
निकल पड़ा था राह में, वो जीत रस की चाह में,
वो मंजिलें थी मछलियां, अर्जुन का मैं शृंगार था।
दिल की थी ये वेदना, था नैन उसका भेदना।
कोशिशें समेट कर, मैं हिम्मतें लपेटकर,
मैं भीड़ गया पहाड़ से, वो शेर की दहाड़ से
पहाड़ ऐसे झुक गया, वो शेर भी था रुक गया
चुनौतियों की सेज से, मैं जल रहा था तेज से।
वो मंजिलें थी दिलरुबा, था प्यार उनका बेवफा
आशिक मैं बेखुमार था, वो इश्क बेशुमार था।
संसार मेरे डर मे था, वो हार मेरे स्वर में था,
हार के प्रहार से, था जल रहा मैं प्यार से,
रक्त मेरा बह गया था, वक्त मेरा सह गया था
जीत के हंकार से और हार के व्यवहार से,
मंजिलों की मार से विजय के उस बाहर से